IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संगीत जगत में राग परिचय का समीक्षात्मक अध्ययन

आयुषी (शोधार्थिनी)

पर्यवेक्षिका- डॉ मधुबाला शर्मा

महात्मा ज्योतिबा फुले

रुहेलखंड विश्वविद्यालय ,बरेली

मुख्य बिंदु: विद्यार्थी, पुस्तकें, भारतीय संगीत, कला, अध्यन।

प्रस्तावना- भारतीय संस्कृति में अनेक धर्म ,जाति ,परंपराओं से संबंधित जन समूह निवास करता है। हमारी संस्कृति का विकास विभिन्न क्षेत्रों में होने के बावजूद कहीं ना कहीं एकरूपता ग्रहण कर लेता है। हमारी भारतीय संस्कृति विविधता से पूर्ण होने के साथ ही साथ प्राचीन भी है। भारतीय कला के जितने भी रूप हो सकते हैं, उन सभी रूपों एवं क्षेत्रो में भारतीय संस्कृति ने अपने विशिष्ट पहचान बनाई है। ललित कलाओं में संगीत का अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है " कला अनेक प्रकार की होती है चित्रकला, काव्यकला, मूर्तिकला ,वास्तुकला ,संगीतकला इत्यादि। यह कलाएं स्वतंत्र रूप से मनुष्य के जीवन पर अपना प्रभाव डालती हैं। उपर्युक्त सभी कलाओं में संगीत कला एक ऐसी सजीव और प्रेरणात्मक कला है जो जीव मात्र को आत्म विभोर कर देती है।" आज के समय में जो कुछ भी ज्ञान हम संगीत के संबंध में रखते हैं। वह सब प्राचीन ग्रंथो के माध्यम से ही संभव हो पाया है इतिहास में ग्रथो का बहुत महत्व है। यह सिर्फ कागज और स्याही से बनी चीज नहीं है, बल्कि यह हमारी सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान की नींव है।

प्राचीन काल से ही ग्रंथ ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं। मौखिक परंपराएं समय के साथ बदल सकती हैं या विस्मृत हो सकती हैं लेकिन ग्रथो के लिपिबद्ध ज्ञान अधिक स्थाई और विश्वसनीय होता है। हमारे वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रंथो में निहित ज्ञान आज तक हमें मार्गदर्शन देता है। यह ग्रंथ किसी भी संस्कृति की पहचान और विरासत को बनाए रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारी धार्मिक पुस्तके, महाकाव्य और साहित्यिक कृतियों से ही हमें प्राचीन संगीत ज्ञान प्राप्त होता है। यह हमें हमारे जड़ों से जोड़ते हैं और हमारी पहचान को मजबूत बनाते हैं। प्राचीन काल का भरत का नाट्यशास्त्र, शारंगदेव जी का संगीत रत्नाकर, मतंग देव का वृहददेशी, अहोबल का संगीत पारिजात, रामामात्य का स्वरमेल कलानिधि, व्यकंटमुखी का चतुर्दंड प्रकाशिका जैसे ग्रन्थो द्वारा हम प्राचीन संगीत का ज्ञान या कहे प्राचीन संगीत का आधार यही से प्राप्त करते हैं। " **जिस देश की सांस्कृतिक थाती जितनी उच्च कोटि की होगी वह देश उतना ही अधिक दूसरे देशों को प्रभावित कर सकेगा। अपने देश के मान मर्यादा और संस्कृति की रक्षा का उत्तरदायित्व संगीतकार पर भी है। इसलिए पुस्तकों के पठन-पाठन की आदत पर हमारे विद्वान जोर देते आए हैं।**"

संगीत की प्रगति में पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसी क्रम में राग परिचय भाग 1 2 3 4 भाग विद्यार्थियों व संगीत जिज्ञासु हेतु बहुत ही लाभान्वित साबित हुए है। प्रत्येक संगीत विद्यार्थी ने राग परिचय से पठन-पाठन अवश्य ही किया होगा। इस पुस्तक की भाषा व

विभागीयकरण छात्र छात्राओं हेतु बहुत सुविधाजनक रहता है जहां एक ही पुस्तक में विद्यार्थियों को समस्त सामग्री एक जगह पर उपलब्ध हो जाती है, इसलिए मेरे द्वारा यह संगीत विषय चुना गया है क्योंकि यह पुस्तक भी मेरे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

स्वआकलन- शोधकत्री संगीत छात्रा के रूप में अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया है, जिसमें अनेक संगीत विषयों का वर्णन प्राप्त हुआ है इसमें से राग परिचय पुस्तक एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, मेरे साथ अनेक संगीत के छात्र-छात्राएं इस बात से पूर्ण सहमत होंगे कि उनके इस संगीत के मार्ग में राग परिचय ने संगीत से संबंधित ज्ञान सहज व सरल ढंग से हमें प्रदान किया है। इस पुस्तक में संगीत के आधारभूत बिंदुओं को शुरुआती स्तर से समझाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक की सरल भाषा छात्र-छात्राएं हेतु किसी विषय को आत्मसात करने में सहयोग प्रदान करती है इस पुस्तक में सहज तरीके से विषयवार सभी विषयों को छात्रों के आयु व कक्षा अनुसार वर्णित किया गया है ,कि उक्त छात्रा की बुद्धि का क्या स्तर है? वह किस रूप में इस ज्ञान को प्राप्त कर पाएगा? इस उद्देश्य का इन पुस्तकों में विशेष ध्यान दिया गया है। संगीत हेतु वैसे तो अनेकों अनेक ज्ञानवर्धक पुस्तके प्राप्त होती है पर उनमें से कई पुस्तकों को हम पढ़ तो लेते हैं परंतु मस्तिष्क में कोई बिंदु आत्मसात नहीं हो पाता है। राग परिचय को पढ़कर चाहे वह ताल हो, राग हो, कोई परिभाषा हो,शास्त्र से संबंधित बिंदु हो ,कोई नया छात्र व संगीत जिज्ञासु भी समझ सकता है।

संगीत के क्षेत्र में जिस समय में पुस्तकें के प्रकाश में आई उस समय किसी निश्चित कक्षा हेतु विशिष्ट पाठ्यक्रम पुस्तके प्राप्त नहीं होती थी। आज के समय में भी संगीत की कक्षा वार पुस्तके कम ही मिलती हैं। हमें अलग-अलग पुस्तकों में खोज कर अपना विषय खोजना होता है। एक नए छात्र हेतु यह कार्य आसान नहीं होता। वह इन पुस्तकों में कक्षावार सभी विषयों को एक पुस्तक में संजोकर छात्र हेतु यह कार्य आसान कर दिया है ।इस कारण यह पुस्तक यूपी बोर्ड, प्रयाग संगीत समिति, गंधर्व मंडल, मुंबई,पंजाब कुरुक्षेत्र, रोहतक ,अमृतसर ,कानपुर आगरा ,राजस्थान मेरठ ,त्रिभुवन यूनिवर्सिटी ,काठमांडू नेपाल, जम्मू और कश्मीर आदि विश्वविद्यालय से सहज ही इस पुस्तक को स्वीकार किया है। इसी के साथ इन पुस्तकों का योगदान व उपयोगिता इतनी अधिक है कि हिंदी भाषष के साथ ही साथ बंगाली व पंजाबी भाषा बोर्ड और विश्वविद्यालय ने भी यह पुस्तक स्वीकार की है।

राग परिचय में समय-समय पर संशोधन कर इसे और उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। और साथ ही जिस निम्न मूल पर यह पुस्तक उपलब्ध कराई जाती रही है। वह इसके अत्यधिक प्रचार प्रसार में भी अहम भूमिका निभाता है। इस प्रकार शोधकत्री के संगीतिक जीवन में इन पुस्तको का महत्वपूर्ण स्थान रहा है ।जिसने मुझे एक संगीतिक छात्रा बनने व ज्ञान वृद्धि में बहुत योगदान दिया है।

राग परिचय भाग 1 का समीक्षात्मक अध्ययन-

राग परिचय भाग 1 पुस्तक के लेखक श्री हरिश्चंद्र श्रीवास्तव जी हैं। व इसका प्रकाशन संगीत सदन साउथ मलाका से होता रहा है। राग परिचय के भाग भाग में निरंतर संशोधन होता रहा है। इस समय 2016 का संशोधित रूप हमें प्राप्त होता है। " **यह पुस्तक यूपी बोर्ड, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, गंधर्व मंडल मुंबई, प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़, पंजाब पंजाबी, कुरुक्षेत्र, मेरठ, कानपुर, गोरखपुर, वाराणसी, जोधपुर आदि विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत हो चुकी है।"** इस पुस्तक में पहले ताने व सरगम नहीं दी गई थी जो विद्यार्थियों की सुविधा की दृष्टि से बढ़ाई गई है। जिससे विद्यार्थियों का स्वर ज्ञान बढ़ जाए। इस पुस्तक की अत्यधिक मांग के कारण बंगाली भाषा में भी इसका अनुवाद किया गया है। इसके साथ ही राग परिचय भाग 1 को पंजाबी भाषा में अनुवादित किया गया है। जिसे पंजाब स्टेट यूनिवर्सिटी चंडीगढ़, के छात्र भी लाभान्वित हो सके।

राग परिचय भाग 1 को लेखक द्वारा हाईस्कूल व प्रयाग संगीत समिति के प्रथम व द्वितीय वर्षों के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखने का प्रयास किया गया है। जिससे कक्षावार छात्रों को सभी विषय एक पुस्तक में एवं एक जगह पर मिल जाते है।जो नए छात्र हेतु सुविधा की दृष्टि से उत्तम है प्रस्तुत पुस्तक में विषय सामग्री को 9 अध्यायो में विभक्त किया गया है। पुस्तक में माध्यमिक शिक्षा परिषद का पाठ्यक्रम व प्रयास संगीत समिति के प्रथम व द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम भी दिया गया है जिससे विद्यार्थियों को सभी विषय वस्तु एक स्थान पर मिल जाती है। पुस्तक में अध्याय से पूर्व भातखण्डे व विष्णु दिगंबर स्वरलिपि का तुलनात्मक अध्ययन दिया गया है। बाद में अध्यायवार विवरण दिया गया है। प्रस्तुत अध्याय का समीक्षात्मक अध्ययन-

प्रथम अध्याय- पुस्तक में प्रथम अध्याय में रागो का विवरण दिया गया है। जिसमें राग का सामान्य परिचय, आरोह अवरोह पकड़ राग की विशेषता आलाप तानों का वर्णन किया है। व राग से संबंधित जो विस्तृत व लघु प्रश्न उत्तर बन सकते हैं ,उनका विवरण हर राग के बाद दिया गया है। जिससे विद्यार्थी यह समझ सके कि उत्तर राग से संबंधित कैसे-कैसे प्रश्न परीक्षा में आ सकते हैं, और यह और वह पूर्ण रूप से राग तैयार करें। विद्यार्थी की समझव बुद्धि स्तर के अनुसार ही पुस्तक की भाषा व विषय सामग्री की मात्रा का ध्यान रखा गया है।

द्वितीय अध्याय- यह अध्याय ताल से संबंधित है। विभिन्न आधारभूत तालों को लिपिबद्ध वर्णित किया गया है। साथ ही भातखंडे व विष्णु दिगंबर स्वरलिपि पद्धति में कैसे लिखते हैं ,का वर्णन व तालों के विभिन्न लयकारी में भी लिखने का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय- इस अध्याय में विभिन्न गायन शैलियो जैसे गीत, ध्रुपद ,धमार, ख्याल, ठुमरी ,टप्पा लक्षण गीत, तराना, चतुरंग ,त्रिवट, स्वरमालिका, होली ,भजन व गीत का सामान्य परिचय दिया गया है। इन सभी शैलियों की परिभाषा राग, ताल, उत्पत्ति, अवयव का परिचय इस अध्याय में दिया गया। और अंत में ऐ अध्याय से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

चतुर्थ अध्याय- किस अध्याय में विष्णु दिगंबर पलुस्कर, अमीर खुसरो, विष्णु नारायण भातखंडे, तानसेन ,स्वामी हरिदास की जीवनिया दी गई है ,और अंत में अध्याय संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

पंचम अध्याय- यह अध्याय अन्य अध्यायो से अपेक्षाकृत बड़ा है। इसमें संगीत शास्त्र संबंधित अनेक बिंदुओं का वर्णन है इस अध्याय में संगीत, ध्वनि ,आंदोलन ,नाद, श्रुति ,स्वर ,सप्तक ,थाठ, राग ,अलंकार, आलाप ,तान सहित अनेक महत्वपूर्ण संगीत से संबंधित बिंदुओं का क्रमवार वर्णन प्रस्तुत किया गया है। व अंत में बिंदुवार प्रश्न दिए गए हैं।

षष्टम अध्याय- यह अध्याय तबले से संबंधित है। इसमे वाद्यो के प्रकार के साथ तबले के अंग, तबला मिलना, तबले के स्वर, तबले के जन्म संबंधित तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही साथ तबले से संबंधित महत्वपूर्ण शब्दों की परिभाषा जैसे- ठेका, तिहाई परण, उठान ,पेशकार, लग्गी ,टुकड़ा ,रेला का भी वर्णन किया गया है और अन्य अध्यायों की भांति प्रश्न भी दिए गए हैं।

सप्तम अध्याय- यह अध्याय सितार व तंबूरा संबंधित है। इसमें पहले तानपुरा का परिचय अंग, तार आदि का वर्णन मिलता है। और फिर बाद में सितार के अंग, तार ,इतिहास महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दावली का वर्णन मिलता है और अंत में प्रश्नों को वर्णित किया गया है।

अष्टम अध्याय- यह अध्याय संगीत के इतिहास संबंधित है। इस अध्याय में संगीत के प्राचीन, मध्य व आधुनिक काल का वर्णन किया है वह अंत में प्रश्नों का वर्णन देखने को मिलता है।

नवम अध्याय - इस अध्याय में विभिन्न निबंध दिए हैं जो छात्रों के परीक्षा उपयोगी साबित होते हैं।

इन अध्यायों के बाद अंत में कुछ अतिरिक्त रागों को संक्षिप्त परिचय चार्ट बनाकर प्रस्तुत किया गया है साथ ही पुस्तक के अंतिम भाग में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का वर्णन किया गया है और संगीत की उपयोगी पुस्तकों की सूची भी उपलब्ध कराई गई है।

राज परिचय भाग 2 का समीक्षात्मक अध्ययन- यह पुस्तक यूपी बोर्ड के इंटर कक्षा व प्रयाग संगीत समिति के तृतीय और चतुर्थ वर्ष के अनुसार बनाई गई है जिसे संगीत सदन प्रकाशन मंडल द्वारा ही छापा गया है ।यह पुस्तक राग परिचय भाग 1 के अगले पड़ाव को प्रस्तुत करती है।

इस पुस्तक में 11 अध्यायों का वर्णन किया गया है जिसमें अलग-अलग बिंदुओं को विभक्त कर बताया गया है जिसका विवरण अध्यायवार निम्न है-

प्रथम अध्याय- इस अध्याय में कक्षा अनुसार रागो का सामान्य परिचय आरोह ,अवरोह ,पकड़, विशेषता, विशेष स्वर संगतिया, आलाप, तान आदि का वर्णन किया गया है। हर राग परिचय के बाद उस राग से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं। बीच में ऐसे राग जिनकी तुलना हो सकती है उनका तुलनात्मक अध्ययन भी दिया गया है ,और अंत में अध्याय से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

द्वितीय अध्याय- यह अध्याय तालों से संबंधित है इसमें विभिन्न तालों की संक्षिप्त परिचय व ठेके का वर्णन किया गया है बाद में लयकारी का वर्णन ,तालों की लयकारी बनाने की विधि भी वर्णित है।

तृतीय अध्याय- यह अध्याय कुछ पारिभाषिक शब्दों से संबंधित है जिसमें नाद, श्रुति ,स्वर ,गमक,मार्गी देशी , निबध्द और अनिबध्द गान ,आलाप के प्रकार ,तान के प्रकार .अलंकारो के प्रकारों का वर्णन किया गया है व अंत में अध्याय से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

चतुर्थ अध्याय- इस अध्याय में राग से संबंधित कुछ बिंदुओं का वर्णन है ,जैसे राग, वादी ,संवादी पूर्वराग, उत्तरराग, गायको के गुण-अवगुण,आविर्भाव तिरोभाव ,राग सिद्धांत का वर्णन किया गया है और अंत में प्रश्न दिए गए हैं।

पंचम अध्याय- यह अध्याय थाट से राग उत्पत्ति प्राचीन व आधुनिक थाट के प्राचीन नाम ,घराने उत्तर व दक्षिण के स्वर श्रुतियों का स्वर विभाजन आदि से संबंधित है ।जिसका वर्णन व प्रश्न इस अध्याय में मिलते हैं।

छटवां अध्याय- इस अध्याय में गीत के प्रकारों जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी ,टप्पा ,तराना, चतुरंग त्रिवट,राग माला, होली ,भजन आदि गीत शैलियों का वर्णन है। अंत में भारतीय संगीत का इतिहास के तीनों काल प्राचीन, मध्य व आधुनिक काल के वर्णन के साथ प्रश्न दिए गए हैं।

सप्तम अध्याय- इस अध्याय में संगीत विद्वानों की जीवनियां वर्णित है। इस अध्याय में विष्णु दिगंबर पलुस्कर, विष्णु नारायण भातखंडे अमीर खुसरो, तानसेन ,शारंगदेव ,गोपाल नायक, स्वामी हरिदास की जीवनी प्रस्तुत की गई है वह अंत में प्रश्नों का वर्णन है।

आठवां अध्याय- इस अध्याय में स्वरों की स्थापना श्रीनिवास जी द्वारा व भातखंडे जी और श्रीनिवास जी के स्वरों के तुलना आदि का वर्णन किया गया है। अंत में अध्याय से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

नया अध्याय- यह अध्याय तानपुरा व तबले के वर्णन से संबंधित है। इसमें तानपुरा के अंग मिलन की विधि तबले के अंग, तबले की मिलने की विधि का वर्णन किया गया है, व प्रश्न दिए गए हैं।

दसवां अध्याय- इस अध्याय में कुछ अतिरिक्त रागो का वर्णन है जो प्रथम अध्याय में नहीं है उन सभी रागो का संक्षिप्त वर्णन इसमें दिया गया है।

ग्यारहवां अध्याय- इस अध्याय में वाद्य और उनके प्रकारों का वर्णन है और सितार से संबंधित पारिभाषिक शब्दों का वर्णन दिया गया है व सितार के इतिहास , घराने का वर्णन भी अध्याय में प्राप्त होता है।

अध्यायों के उपरांत परिशिष्ट में अहोबल, भरत, मानसिंह तोमर ,व्यंकटमुखी की जीवनियां दी गई है ।व कुछ रागो का संक्षिप्त विवरण चार्ट द्वारा वर्णित किया गया है। इसके उपरांत प्रयाग संगीत समिति के तृतीय, चतुर्थ वर्ष के अनुसार प्रश्न पत्र विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु वर्णित किए गए हैं।

राग परिचय भाग 3 का समीक्षात्मक अध्ययन

राग परिचय भाग 3 पुस्तक के लेखक द्वारा प्रयाग संगीत समिति के पंचम और षष्टम वर्ष के पाठ्यक्रम के अनुसार यह पुस्तक तैयार की गई है पुस्तक का प्रकाशन संगीत सदन प्रकाशन मंडल इलाहाबाद के द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में भाग 1व भाग 2 से इतर अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं का वर्णन किया गया है। राग परिचय पुस्तक में संशोधन कर अनेक सामग्री जोड़ी गई है। पंडित हरिश्चंद्र जी ने स्वयं भी कहा है " **अपनी कुछ आदत ही ऐसी रही है कि मुझे अपनी लेखनी से पूर्ण संतोष नहीं मिलता जब कभी किसी पुस्तक की नई संस्करण छपती है। तो मैं उसे लगभग फिर से लिखता हूं और जहां कहीं भी कमी दिखाई पड़ती है उसकी पूर्ति करता हूं। इसी प्रयास के परिणाम स्वरुप इसका संशोधित व परिवर्तित रूप आपके समझ है।"** प्रस्तुत पुस्तक का हमें 2016 का संशोधित रूप प्राप्त होता है पुराने भागो से अतिरिक्त सामग्री इस भाग में प्राप्त होती है ।

राग परिचय भाग- 3 में 9 अध्यायों का वर्णन किया गया है। जिसमें अलग-अलग सामग्री को विभक्त कर प्रस्तुत किया गया। जिसका हम अध्यायवार वर्णन करेंगे-

प्रथम अध्याय- इस अध्याय में रागो का वर्णन किया गया। जिसमें राग का सामान्य परिचय, आरोह अवरोह और पकड़ ,विशेषता ,आलाप तान हर रातग से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं। तुलनात्मक अध्ययन में रागो की समता विभिन्नता का वर्णन प्राप्त होता है।

द्वितीय अध्याय- इस अध्याय में संगीतज्ञो की जीवनी का वर्णन इसमें मिलता है ।जिनकी जीवनी भाग 1 व भाग 2 में नहीं प्राप्त होती है उनका वर्णन इस भाग में जैसे -अब्दुल करीम खां,अहोबल, सदारंग अदारंग ,श्रीनिवास, मोहम्मद रजां ओंकारनाथ ठाकुर आदि। अंत मे अध्याय से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

तृतीय अध्याय- यह अध्याय वाद्य एवं उनके प्रकार,सहायक नाद, संगीत का इतिहास प्राचीन काल मध्यकाल व आधुनिक काल का विस्तृत वर्णन इस अध्याय में मिलता है।

चतुर्थ अध्याय-इस अध्याय में राग वर्गीकरण के प्रकारों को वर्णित किया गया है ।इसमें ग्राम- राग, राग रागिनी, राग वर्गीकरण, 10 विधि राग वर्गीकरण, शुद्ध छायालग, संकीर्ण वर्गीकरण का वर्णन प्राप्त होता हैह व अंत में अध्याय संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

पंचम अध्याय- इस अध्याय में ग्राम ,मूर्च्छना ग्राम के प्रकार, सारणा चतुष्टयी उत्तर और दक्षिणी संगीत पद्धति की तुलना, कर्नाटक ताल पद्धति ,कर्नाटक ताल को हिंदुस्तानी ताल पद्धति में लिखना ,हिंदुस्तानी तालों को कर्नाटक पद्धति में लिखने का वर्णन प्राप्त होता है ।अंत में अध्याय संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

षष्टम अध्याय- यह अध्याय तालों से संबंधित है। जिसमें तालों के ठेके बड़ी व कठिन तालों का विवरण इस अध्याय में प्राप्त होता है जैसे ब्रह्मताल ,लक्ष्मी ताल, गजझम्पा ,रूद्रताल ,मततताल आदि।साथ ही लयकारी दुगुन ,तिगुन, डेढ़ गुना, सवागुना पौनगुना आदि लयकारी बनाने की विधि इसमें बताई गई है। संबंधित प्रश्न इसके अंत में दिए गए हैं।

सप्तम अध्याय- इस अध्याय में गायन के घरानों का वर्णन किया गया है ।प्राचीन व आधुनिक श्रुति स्वर व्यवस्था, भरत, शारंगदेव, लोचन, रामामात्य , पुंडरीक, सोमनाथ, व्यंकटमुखी के स्वर, प्राचीन व आधुनिक स्वर व्यवस्था, वीणा के तार पर श्रीनिवास के स्वर स्थापना, नाद के प्रकार, आंदोलन संख्या और तार की लंबाई व गुणांतर, तार की लंबाई पर आंदोलन संख्या निकालना आदि बिंदुओं का विस्तृत वर्णन इसमें प्राप्त होता है और अंत में इनसे संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

अष्टम अध्याय- इस अध्याय में ध्रुपद की चारों बनियां, गायक, अल्पत्व बहुत्व, निबध्द अनिबध्द गान, आलाप के प्रकार, मार्गी देशी संगीत, गमक ,न्यास, ग्रह उपन्यास ,तिरोभाव आविर्भाव का वर्णन किया गया है और अंत में अध्याय से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

नवम अध्याय -इस अध्याय में पाश्चात्य, सोल्फा, स्टाफ ,की सिग्नेचर ,पाश्चात्य ताल पद्धति, स्केल का विवरण, हार्मनी मेलोडी, कार्ड, वाइब्रेशन का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है ।बिंदुवार प्रश्नों का वर्णन भी साथ में किया गया है।

अध्यायों के उपरांत पुस्तक में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उत्तर सहित विवरण दिया गया है वह अंत में संगीत उपयोगी पुस्तकों की सूची भी सहायक हेतु दी गई है।

राग परिचय भाग 4 का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत पुस्तक को प्रयाग संगीत समिति के प्रवीण(सप्तम व अष्टम वर्ष) के पाठ्यक्रम अनुसार निर्मित किया गया है इस पुस्तक का प्रकाशन भी अन्य भागों के समान संगीत सदन प्रकाशन जो पंडित हरिश्चंद्र श्रीवास्तव जी का स्वयं प्रकाशन मंडल है के द्वारा प्रकाशित की गई है। राग परिचय पुस्तक विद्यार्थी हेतु कितनी उपयोगी साबित हुई है यह तो स्वयं लेखक द्वारा लिखित पाठकों से अनुरोध शीर्षक से पता चलता है " **परीक्षाओं के लिए अनेक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है और उससे काफी सामग्री प्राप्त हो जाती है किंतु थोड़ी ही पुस्तक उच्च कक्षाओं के लिए अभी तक थोड़ी ही पुस्तके प्रकाशित हुई है। इसलिए प्रस्तुत पुस्तक रात परिचय भाग 4 बड़ा महत्व रखता है इसके प्रथम तीनों भागों को पाठकों ने जिस आत्मीयता से अपनाया हम उनके बहुत ऋणी है।"**

राग परिचय भाग 1 2 3 में सामग्री को अध्यायों में विभक्त किया गया है परंतु भाग 4 में बिंदुवार सामग्री मिलती है। जैसे हम बिंदुवार ही समीक्षात्मक अध्ययन करेंगे जो इस प्रकार से है-

कुछ रागो का परिचय- इसके अंतर्गत रागो का संक्षिप्त परिचय आरोह अवरोह पकड़, विशेषता आलाप, ताने आदि वर्णित की गई है वह हर राग के अंत में राग के अनुसार प्रश्न दिए गए हैं।

कुछ रागो का संक्षिप्त परिचय -इसके अंतर्गत रागो का परिचय आरोह अवरोह ,कुछ विशेषताएं व रागो के स्वरों से निर्मित स्वरूप का वर्णन इसमें मिलता है।

रागो की तुलना- इसके अंतर्गत अनेक रागो की तुलना दी गई है, जिसमें रागो की समता व विभिन्नता बताई गई है ,तुलना से संबंधित प्रश्न अंत में दिए गए हैं।

कुछ तालों के ठेके- इसके अंतर्गत तालों के ठेके व संक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही लयकारी जैसे आड़,कुआड़,बिआड़ का वर्णन इसमें तालों के उदाहरण सहित दिया है, व अंत में ताल से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

इन बिंदुओं के पश्चात संगीत शास्त्र से संबंधित बिंदुवार विभाजन दिया गया है जो निम्न है

ध्वनि मीमांसा- इसके अंतर्गत नाद ,नाद के लक्षण नाद के गुण का वर्णन प्रश्नो सहित दिया गया है।

श्रुति स्वर विचार- इसके अंतर्गत श्रुति, भरत की सारणा ,भरत,शारंगदेव, लोचन रामात्य, सोमनाथ ,पुंडरीक विट्ठल, व्यंकटमुखी, अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का वर्णन तुलना, आधुनिक स्वर व्यवस्था का वर्णन इस भाग में मिलता है।

राग वर्गीकरण-इसमें जाति वर्गीकरण, जाति के लक्षण ग्राम, 10 विधि राग वर्गीकरण, राग रागिनी वर्गीकरण ,विट्ठल का राग वर्गीकरण, राग रागिनी के प्रकार, थाट, रागांग वर्गीकरण का विस्तृत वर्णन प्रश्न सहित प्राप्त होता है।

ग्राम की व्याख्या और प्रकार -इसके अंतर्गत 22 श्रुतियों पर तीनों ग्राम के स्थान का वर्णन किया गया है।

मूर्चना की व्याख्या और लक्षण- इसके अंतर्गत मूर्च्छना प्रकार, मूर्च्छना,ओर थाट में तुलना का वर्णन किया गया है, व संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

स्वर संवाद- इस अध्याय में स्वर संवाद से संबंधित षडज पंचम और षडज मध्यम संवादों का वर्णन बताया गया है साथी भारतीय संगीत में स्वर संवाद का वर्णन भी मिलता है।

कर्नाटक संगीत के स्वर- कर्नाटक स्वरों का वर्णन कीर्तन, कृति ,वर्णम, प्रबंध, रागमालिका, तिल्लाना आदि का वर्णन इसके अंतर्गत मिलता है।

गायक और गायक की के तत्व- इसके अंतर्गत गायकी के महत्वपूर्ण तत्वों आलापचारी का ढंग, गीत की बंदिश,तान उपज, रागो का चुनाव ,लय ताल का प्रयोग इसमें वर्णित किया गया है।

गायन के घराने- इसके अंतर्गत ख्याल गायन व उसके घरानों का विस्तृत वर्णन विशेषताओं सहित वर्णित है।

कुछ ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय- इसके अंतर्गत नाट्यशास्त्र ,संगीत परिजात, संगीत रत्नाकर, गीत गोविंद ,संगीत मकरंद ,चतुर्दंडप्रकाशिका , स्वरमेलाकलनिधि ग्रन्थों का विवरण मिलता है।

संगीत में छंद का महत्व- इसमें छंद का वर्णन मिलता है।साथ ही मात्रक गण, वर्णिक गण का भी विवरण मिलता है।

पश्चात्य स्टाफ नोटेशन का परिचय- इसके अंतर्गत सोल्फा ,न्यूमस ,चीव,स्टाफ, पद्धतियों का वर्णन है। साथ ही पाश्चात्य स्वरों के नाम, पश्चात्य ताले ,उसके चिन्ह ,प्रबंध उसके प्रकार व अंग का भी वर्णन मिलता है।

परिशिष्ट- इसके अंतर्गत ध्वनि, आंदोलन संख्या, ईष्ट अनिष्ट स्वर संवाद,कांसोनेंस डिसोनेंस, संगीत की उत्पत्ति काकु,राग रागांग आदि का वर्णन किया गया है।

पारिभाषिक शब्दों की तुलना- इसके अंतर्गत विभिन्न पारिभाषिक शब्द जिनकी तुलना संभव है जैसे -आहत अनाहत, नाद,श्रुति, स्वर ,तिरोभाव आविर्भाव, ग्राम मूर्च्छना, हार्मनी, मेलोडी आदि सहित बहुत से शब्दों का विस्तृत तुलना इसमें प्राप्त होती है।

निष्कर्ष- संगीत की पुस्तके संगीत शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल संगीत के तकनीकी पहलुओं को समझने में मदद करती है बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक ,सामाजिक और भावात्मक विकास में भी सहायक होती है। संगीत का प्रयोगात्मक पक्ष जितना महत्वपूर्ण है उतना ही शास्त्र पक्ष भी है। **"स्वर ,ताल ,राग ,रागिनी आदि का ज्ञान चुनी हुई शिक्षण संस्थानों में तथा सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा जनसाधारण को योजना पूर्वक करना वांछनीय है।वह इस प्रकार हो सकता है कि कुछ ऐसे संगीतज्ञ चुने जाएं, जिनका व्यवहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान माना हुआ हो और प्रामाणिक हो। वे 'संगीत शिक्षा' नाम की पुस्तक के विभिन्न अध्याय लिखे।"** इसी क्रम में राग परिचय पुस्तक भी विद्यार्थियों को संगीत के गहरे अध्ययन और समझ में मदद करती है इसके साथ ही वह उनके समग्र विकास में भी सहायक होती है। इसलिए संगीत की पुस्तकों का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी है।राग परिचय पुस्तक ने विद्यार्थियों व संगीत जिज्ञासुओं के जीवन में बहुत महत्व रखती है। इसका पता स्वयं पुस्तक में वर्णित मिलता है जो लेखक द्वारा स्वयं दिया गया है। " **वर्तमान समय में इस समय तक संगीत की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैऔर दिन प्रतिदिन प्रकाशित होती जा रही है। मुझे इस बात पर अत्यधिक हर्ष और संतोष है कि अनेक पुस्तकों के आगमन पर भी पाठकों ने राग परिचय की श्रृंखला को बहुत अधिक पसंद किया है और इसे अपनाया है।"**

यह पुस्तक विद्यार्थी हेतु संपूर्ण रूप से सृजित की गई है।जिसमें प्रत्येक विद्यार्थियों को एक ही पुस्तक में पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री ,प्रश्नोत्तरी, बहुविकल्पीय प्रश्न ,प्रयोगात्मक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान सभी कुछ प्राप्त हो जाता है ।अतः हम कह सकते हैं की राग परिचय पुस्तक के चारों भाग संगीत जगत में अपना विशेष गुणों के कारण अपना एक अलग पहचान बनाए हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1-सौ• सुमन पाटणकर, हमारा संगीत ,पेज न•111

2-बसंत, संगीत विशारद, पेज न•101

3- पंडित हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 1, पेज न• 2

4-पंडित हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 3, पेज न• 2

5- पंडित हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 4 पेज न• 2

6- लक्ष्मी नारायण गर्ग, निबंध संगीत, पेज न•631

7- पंडित हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 2 पेज न• 2

शोध - सार

संगीत में पुस्तको का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि वे ज्ञान ,तकनीक, इतिहास और भावनात्मक अभिव्यक्ति को संरक्षित और प्रसारित करने का माध्यम होती है। जहां एक और संगीत से संबंधित पुस्तके राग, ताल स्वर लय और वाद्य यंत्रों की तकनीक को विस्तार से समझने में मदद करती है। संगीत की पुस्तके द्वारा विभिन्न शैलियों ,कलाकारों और अपनी सांगीतिक विरासत को जानने, समझने का अवसर मिलता है तो वहीं दूसरी ओर संगीत सिखने वाले छात्रों के लिए पुस्तक एक मार्गदर्शक की तरह होती है, वह अभ्यास की विधियां रचनाएं बताती हैं। जिन विद्यार्थियों को गुरुओं से नियमित रूप से सीखने का अवसर नहीं मिलता। उनके लिए पुस्तके की एक स्वअध्ययन का प्रभावी साधन बन जाती है। इसी क्रम में राग परिचय पुस्तक के चारों भाग विद्यार्थियों को संगीत का गहन अध्ययन तो करती ही है साथ ही साथ विद्यार्थी और कलाकारों को प्रेरित करती हैं,कि उन्हें संगीत की गहराइयों तक पहुंचने में सहायता दान करती हैं ।राग परिचय पुस्तक का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह पुस्तक न केवल अनुभव व ज्ञान का संग्रह है परंतु पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत परंपरा को आगे बढ़ाने में भी मदद करती है ।इन चारों पुस्तकों के न केवल हमारा मार्गदर्शन हमारा किया है ,अपितु संगीत से संबंधित महत्वपूर्ण ज्ञान हमें सरल व सहज रूप में प्रदान किया है।